International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(I), July - September, 2022, pp. 75-81

राजस्थान में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में व्यक्तिगत प्रयास

सुनील कुमार ढ़ाका*

सार

"क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। देश के कुल क्षेत्रफल के 10.41 प्रतिशत भाग पर यह फैला हुआ है। इसके कुल क्षेत्रफल के 61.11 प्रतिशत भू–भाग पर थार का मरुस्थल पाया जाता है। राजस्थान की जलवायु उष्णकटिबंधीय जलवायु पाई जाती है। इसमें तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 9.6 प्रतिशत भाग पर वन पाए जाते हैं। देश के सतही जल संसाधनों में राजस्थान की 1.16 प्रतिशत हिस्सेदारी है। राजस्थान शुरू से ही विषम परिस्थितियों से घिरा हुआ राज्य है। लेकिन यहां के लोगों ने विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी अपने आप को अनुकूलित किया है। पानी की कमी को दूर करने के लिए बारिश के पानी को एकत्रित कर उसको पूरे साल भर काम में लेते हैं लेकिन वर्तमान समय में वातावरण के दूषित हो जाने से इन सभी में विकृतियां उत्पन्न हो गई है। बारिश जितनी चौमासे में होती थी उतनी आज 15–20 दिनों में हो जाती है। जिस कारण अतिवृष्टि से फसल नष्ट हो जाती है और अंत में पानी की कमी से। जलवायु परिवर्तन से राज्य का तापमान बढ़ता जा रहा है। जिससे फसल प्रतिरूप भी प्रभावित होने लगा है। इसी का नतीजा है कि 2021 में भिवाड़ी विश्व का सबसे प्रदूषित शहर रहा। देश में प्रदूषण से होने वाली मौतों में भी राजस्थान अव्वल है। आज अवैध खनन के कारण अरावली पर्वत माला का 25 प्रतिशत भाग नष्ट हो चुका है। इस प्रकार पर्यावरण के प्रदूषित हो जाने से अनेक सारी बीमारियां उत्पन्न हो गई है। जल्दी ही इनकी तरफ ध्यान नहीं दिया गया तो स्थिति विकट हो सकती है। पर्यावरण संरक्षण के बारे में अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण के बारे में सरकार तो प्रयास कर ही रही है लेकिन हम सभी की भी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि इस दिशा में प्रयत्न करें ताकि प्रकृति को सुरक्षित रखा जा सके।"

शब्दकोश : *पौधारोपण, ट्रीमैन, जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरणप्रेमी।*

प्रस्तावना

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करने वाले व्यक्तिगत प्रयासों की चर्चा की गई है। इन प्रयासों द्वारा जनमानस के पटल पर एवं पर्यावरण संरक्षण में योगदान से उत्पन्न प्रभावों का आंकलन कर उनको सरकारी नीतियों में लागू करना है, ताकि पर्यावरण हित में ओर सुगमता से कार्य किया जा सके।

अनुसंधान क्रियाविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ों को उपयोग में लिया गया है। ये द्वितीयक आंकड़े प्रकाशित पुस्तकें, शोध पत्र, पत्रिकाओं, विभिन्न सरकारी वेबसाइटों, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में काम करने वाले सरकारी संगठनों और गैर सरकारी संगठनों एवं स्थानीय लोगों से बातचीत के आधार पर प्राप्त किए गए है।

* सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

परिचय

विश्व में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता की शुरुआत सन 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित **'स्टॉकहोम सम्मेलन'** में हुई। यह विश्व का पहला पर्यावरण सम्मेलन था। 5 जून, 1974 को विश्व का पहला पर्यावरण दिवस मनाया जाने की शुरुआत की हुई। 1987 में ओजोन परत को बचाने के लिए **'मॉन्ट्रियल समझौता'** हुआ। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि एवं जैव विविधता के संरक्षण के लिए 1992 में रियो डी जेनेरो में **'पृथ्वी सम्मेलन'** का आयोजन किया गया। बढ़ते भूमंडलीय तापमान से पृथ्वी को बचाने के लिए 1997 में **'क्योटो सम्मेलन'** का आयोजन हुआ। था। इस प्रकार समय–समय पर विश्व में सम्मेलन होते रहते हैं ताकि प्रकृति को बचाया जा सके।

भारत में इस दिशा में प्रयास 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन के बाद किए जाने लगे। इसके लिए सरकार ने संविधान संशोधन कर राज्यों को निर्देश दिया कि देश के वन एवं वन्य जीवन की रक्षा करें। वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम 1972, वन संरक्षण अधिनियम 1980, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986, जैव विविधता संरक्षण अधिनियम 2002, राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2004 एंव इसके अलावा प्रदूषण से संबंधित अनेक अधिनियम सरकार द्वारा पास करके लागू किये। इन कानूनों के नियमों की पालना के लिए सरकार ने अलग से पर्यावरण मंत्रालय, विभागों एव बोर्डों का गठन किया गया ताकि इस दिशा में सकारात्मक प्रयास किए जा सकें। इसके अलावा विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं स्कूलों में पर्यावरण अध्ययन से संबंधित विषय शुरू किये गए।

राजस्थान में भी इन नियमों, कानूनों को लागू किया गया। अलग से विभागों की स्थापना की गई। वर्तमान समय में राजस्थान में पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन विभाग, राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड, एंव राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड अपना कार्य बखूबी रूप से निभा रहें हैं। राजस्थान सरकार द्वारा 8 फरवरी, 2010 को अपनी पहली **'वन पर्यावरण नीति'** घोषित की गई। राजस्थान पर्यावरण नीति घोषित करने वाला देश का पहला राज्य बना। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 2020 में कहा है कि जल्दी ही नई पर्यावरण नीति राज्य में लागू की जाएगी। पर्यावरण संरक्षण की दिशा उचित रूप से प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन ये प्रयास कम पड़ते दिखाई दे रहें है। इसलिए लोगों को जागरूक होना बहुत जरूरी है। यदि लोग जागरूक नहीं होंगे तो नियम कानून बनाने से कुछ नहीं होगा और यह पर्यावरण हमेशा खतरे में रहेगा ।

पर्यावरण से संबंधित आंदोलन भारत में जल, जंगल और जमीन से जुड़े परंपरागत अधिकारों को पुनः स्थापित करने, वनों को संरक्षित करने, जैवविविधता की रक्षा करने एंव पर्यावरण की रक्षा करते हैं। आम लोगों की विकास प्रक्रिया में भागीदारी को भी सुनिश्चित करते हैं। यही कारण है कि इन आंदोलनों ने जन आंदोलन का रूप ग्रहण किया। इसमें पुरुष, महिलाएं एवं बच्चों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। राजस्थान में 18वीं शताब्दी के शुरुआत में एक आंदोलन शुरू किया गया। जोधपुर के महाराजा ने पेड़ों को गिराने का आदेश दिया। इनको बचाने के लिए अमृता देवी नामक एक महिला के नेतृत्व में 84 गांव के एक बड़े समूह ने अपना जीवन लगा दिया। सभी विश्नोई लोगों ने पेड़ों की रक्षा की और अपना बलिदान दिया। भारत में 1970 के दशक में उत्तराखंड में चिपको आंदोलन की शुरुआत हुई। इसमें ग्रामीणों ने पेड़ों को गले लगाया और ठेकेदारों को पेड़–पौधे को काटने रोका। इसके अलावा दक्षिण भारत में पांडुरंग हेगड द्वारा अप्पिको आंदोलन, साइलेंट घाटी आंदोलन, मेधा पाटकर द्वारा नर्मदा बचाओ आंदोलन, सुंदरलाल बहुगुणा और चंडी प्रसाद भट्ट द्वारा टिहरी बांध जन आंदोलन भ्ाुरू किए गए।

राजस्थान सरकार के अलावा लोगों द्वारा किए गए व्यक्तिगत प्रयास

- **पद्मश्री हिम्मताराम भांभू**

पद्मश्री हिम्मताराम भांभू जी नागौर जिले के सुखवासी गांव के रहने वाले हैं। इन्होंने वृक्षारोपण की प्रेरणा अपनी दादी से ली, जब ये 18 वर्ष के थे। सन् 1975 से लेकर आज तक ये लाखों पौधे गांव–गांव लगा चुके हैं। नागौर के हरिमा गांव के पास 6 एकड़ जमीन खरीद कर उसमें 11,000 पौधे लगाकर एक हरा भरा जंगल तैयार किया है। जिसमें वर्तमान समय में हजारों पक्षी, जीव–जंतु निवास कर रहे हैं। विद्यार्थी प्रैक्टिकल

ट्रेनिंग लेने के लिए इस जंगल में आते हैं। इन पक्षियों एंव जीव–जंतुओं को रोजाना 20 किलो अनाज खिलाते हैं। यह सब कार्य इन्होंने अपने स्वयं के पैसों से किया है। हिम्मतारामजी ने मरुस्थल में वर्षा के पानी को खेत में रोककर वहां पर पेड़ लगाए।

इसके अलावा ये नशा मुक्ति की दिशा में भी कार्य कर रहे हैं। शिकारियों के खिलाफ भी आवाज उठाते हैं। जानवरों से इतना लगाव है कि ये मेनका गांधी की संस्था '**पीपल फॉर एनीमल**' से भी जुड़े हुए हैं। इनके द्वारा किए गए कार्यों के कारण इन्हें राजीव गांधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार, सन् 2020 में पद्मश्री सम्मान एंव यूनेस्को द्वारा भी पुरस्कृत किया गया है।

- **प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी**

प्रोफेसर ज्याणी मूल रूप से श्रीगंगानगर जिले के रायसिंहनगर तहसील के निवासी और राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर में समाजशास्त्र विभाग में सह आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। प्रोफेसर ज्याणी अपने स्वयं के संसाधनों से पिछले 20 वर्षों से गांव–गांव लोगों एवं विद्यार्थियों के बीच जाकर उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का कार्य किया। पौधारोपण की शुरूआत इन्होंने अपने महाविद्यालय से की। वर्तमान समय में महाविद्यालय हरियाली से भरपूर जगह बन गया है। अपनी स्वयं की तनख्वाह से पश्चिमी राजस्थान में लाखों पौधे लगाकर रेगिस्तान को कम करने का प्रयास किया। जिससे मिट्टी का कटाव कम हुआ एवं भूमि का संरक्षण हुआ।

इनके कार्यों से प्रभावित होकर इन्हें राजीव गांधी पर्यावरण पुरस्कार एवं 2021 में भूमि संरक्षण का दुनिया का सर्वोच्च पुरस्कार पारिवारिक वानिकी के लिए '**लैंड फॉर लाइफ पुरस्कार**' प्रदान किया गया। प्रोफेसर नशा मुक्ति के विभिन्न कार्यक्रमों से भी लंबे समय से जुड़े हुए हैं।

- **प्रदीप कुमार माली**

प्रदीप कुमार माली राजस्थान के सीकर जिले के निवासी है। इनकी उम्र मात्र 21 वर्ष है। लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए 2021 मे कश्मीर से कन्याकुमारी तक पैदल यात्रा शुरू की है। इनकी पैदल यात्रा का उद्देश्य है कि रास्ते में लोगों को पेड़ लगाने को लेकर जागरूक करना और पेड़ों को नहीं काटने को लेकर समझाना है। उत्तर से दक्षिण तक के 4000 किलोमीटर की यात्रा का संदेश है '**पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ**'। अब यात्रा के साथ भारतीय संस्कृति को समझना भी इनकी आदत बन गई है।

- **ट्रीमैन विष्णु कुमार लांबा**

टोंक निवासी विष्णु कुमार लांबा को बचपन से ही पेड–पौधे लगाने का शौक था। इस शौक को पूरा करने के लिए एक बार इन्होंने एक पौधा चुराया। इसलिए लोग उन्हें पौधा चोर कहने लगे। आज यही पौधा चोर देश का ट्रीमैन बन गया है। उनको पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने ट्रीमैन की उपाधी प्रदान की। लांबाजी का गांव ग्रीन विलेज के नाम से जाना जाता है। इन्होंने अपने ही गांव में कम से कम डेढ़ लाख पौधे लगाकर गांव को हरा–भरा बनाया। अब तक इनकी संस्था द्वारा लगभग 50 लाख से अधिक पौधारोपण किया गया है। इनका सपना है कि गांव में आदर्श स्कूल की तरह पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी कम से कम 100 ग्रीन गांव तैयार हो एवं उनमे कम से कम 5 करोड पौधे संरक्षित हो। इन्होंने पेड़–पौधों को काटने से बचाने के लिए अदालती लड़ाई भी लड़ी।

गांव में बच्चों को **जन्मदिन पर पांच पौधे उपहार स्वरूप देते** हैं एवं उनसे इन को संरक्षित करने का वचन भी लेते हैं। लोगों को श्री कल्पतरू संस्थान के माध्यम से इको फ्रेंडली रोजगार भी उपलब्ध करवाते हैं ताकि लोग इस वर्तमान समय में रासायनिक जहर से बच सके। पर्यावरण के क्षेत्र में दिए गए योगदान के कारण इन्हें महाराष्ट्र सरकार ने ग्रीन आर्मी का एंबेस्डर नियुक्त किया। अब तक इन्हें राजीव गांधी पर्यावरण पुरस्कार, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम राष्ट्रीय निर्माण पुरस्कार, अमृता देवी अवार्ड, ग्रीन आइडल अवार्ड सहित करीब 150 से अधिक पुरस्कार मिल चुके हैं। पर्यावरण के क्षेत्र में इनकी सफलता पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डीडब्ल्यू जर्मन ने एक शॉर्ट डॉक्युमेंट्री फिल्म तैयार की है जो कि 30 भाषाओं में प्रसारित हो रही है।

- **पद्मश्री श्याम सुंदर पालीवाल**

श्याम सुंदर जी राजसमंद जिले के पिपलांत्री आर्द ा ग्राम पंचायत के सरपंच रह चुके हैं। सरपंच रहते हुए अनेक सामाजिक सेवाओं के कार्य करने के कारण इन्हें पद्मश्री से नवाजा गया। इनका मुख्य उद्देश्य जनजीवन और जंगल को बचाना है। इनका कहना है कि जिंदगी का असली सुकून तो कंक्रीट के जंगल में न होकर पेड़–पौधों के जंगलों में है। उन्होंने लोगों को जैविक खेती और पेड़ लगाने के बारे में जागरूक किया। खेतों में सिंचाई के लिए 4500 चैक डैम बनवाए, सरकारी जमीनों को भू माफियाओं से छुड़वाया, गांव वालों को एलोविरा और आंवला की फसल का सुझाव दिया और गांव में एक प्लांट लगवाया। जिसमें एलोविरा और आंवला का जूस और इसके साथ ही क्रीम बनाकर बाजारों में बेची जाती है। इस कारण आज गांव में कोई बेरोजगार नहीं है।

गांव में बेटियों को बोझ समझा जाता था, जिसके लिए सरपंच रहते हुए उन्होंने एक **'किरण निधि योजना'** की शुरुआत की। अपनी बेटी किरण के जन्म पर 111 पौधे लगाकर इस योजना की शुरुआत की और इस योजना को पूरे गांव में लागू किया। इस योजना के तहत बेटी के जन्म लेने पर उसके नाम पर 111 पौधे लगाए जाते हैं और उसके बेहतर भविष्य के लिए ₹21000 भी खाते में जमा करवाए जाते हैं। इसके साथ ही उससे एक फॉर्म भरवा कर शपथ पत्र लिया जाता है कि वह 20 साल से पहले लड़की की शादी नहीं करेंगे और बेटी को पढ़ाएंगे। इस प्रकार आज गांव में बेटियों को कोई बोझ नहीं समझता है। उनका यह पिपलांत्री मॉडल डेनमार्क की स्कूलों में भी पढ़ाया जाता है।

- **ग्रीन मैन बाड़मेर निवासी नरपत सिंह राजपुरोहित**

नरपत सिंह राजपुरोहित जी ने पर्यावरण संरक्षण एवं जल संरक्षण जागरूकता को लेकर 27 जनवरी, 2019 को जम्मू हवाई अड्डे से अपनी यात्रा शुरू की। संभवतः यह विश्व की सबसे लंबी साइकिल यात्रा है। यह लंबी साइकिल यात्रा 20 से अधिक राज्यों एवं केंद्र शासित राज्यों में 30121.6 किलोमीटर की यात्रा तय कर 20 अप्रैल, 2022 को अमर जवान ज्योति, जयपुर पहुंची, जहां इसका समापन हुआ। उनका मकसद पूरे भारत भर में पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करना है। ग्रीन मैन एक पैर में 38 टांके लगने व 10 प्रति ात विकलांगता होने के बावजूद भी अपने लक्ष्य को साधने में लगे हूए हैं। इससे पहले भी ये कई यात्राएं कर चुके हैं। इनके द्वारा बहुत सारे वन्यजीव बचाए गए हैं। जब भी पक्षी घायल अवस्था में पाए जाते हैं या वन्यजीवों के बारे में सूचना मिलती है तो निजी अस्पताल में अपने स्तर पर इलाज करवाते हैं और हमेशा वन विभाग के लिए तत्पर रहते हैं। वन्यजीवों के पीने के पानी के लिए कुण्ड बनवाए और कई शिकारियों को पकड़वाया। राजस्थान में बाड़मेर जिले में गर्मी की ऋतु में स्वयं के पैसों से ट्रैक्टर से पानी डलवाते हैं।

पक्षियों के संरक्षण में भी है अद्भुत कार्य कर रहे हैं। इसके लिए **'आओ एक साथ आओ और पक्षियों को बचाओ'** पोस्टर जारी किया। चीनी मांझा के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए जागरूकता अभियान चलाया। गर्मियों में पक्षियों के पानी के लिए विशेष अभियान चलाया जाता है। राजस्थान व अन्य राज्यों में अब तक लगभग 100000 पौधे लगाए हैं। इसके लिए **'पौधे लगाओ, पर्यावरण बचाओ'** का पोस्टर जारी किया। समाज में सामाजिक कुरीति दहेज प्रथा को बंद करने के लिए उन्होंने अनूठा प्रयोग किया। इसके लिए उन्होंने अपनी बहन मीना को **दहेज के रूप में 251 पौधे दिए**। भतीजी हंसा कर को भी दहेज के रूप में 151 पौधे दिए। जो लोग पौधे लेने के इच्छुक हैं उनको पौधे प्रदान करते हैं। इनका कहना है कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति हम सबको मिलजुल कर काम करना होगा। अपनी यात्रा का ज्यादातर हिस्सा ग्रामीण इलाकों से ही चलते हैं और ग्रामीणों में पौधारोपण के लिए जागरूकता पैदा करते हैं। ग्रामीण इलाकों में चलने का यह फायदा है कि वहां पौधारोपण के लिए जगह मिल जाती है। रोजाना यात्रा में 2 से 4 पौधे खुद ऐसी जगह लगाते हैं ताकि वे एक पेड़ का रूप ले सके।

- **महावीर प्रसाद पांचाल**

महावीर प्रसाद पांचाल बूंदी जिले में सहण गांव के निवासी हैं। बड़े होने पर इनको गुटका खाने की बुरी लत लग गई लेकिन इनको बचपन से ही पौधे लगाने का शौक था। इनको जैसे ही पेड़–पौधों के बीज मिलते उनको संभाल कर रखते और बारिश के दिनों में लगा देते। दुकान चलाते वक्त इनकी मुलाकात एक दुर्व्यसन मुक्ति मंच नाम के एनजीओ से हुई। उन्होंने कहा कि जितने रुपए के तुम गुटखे खाते हो, उतने रुपए के तुम काजू किशमिश, बादाम खाओ। यह सुनकर इन्होंने सोचा कि यदि मैं गुटखा खाना बंद कर दूं तो मेरे बचपन का शौक पूरा हो सकता है। उसी समय उन्होंने यह निर्णय लिया कि मैं आज के बाद गुटखा नहीं खाऊंगा और गुटखा खाने से जितने पैसे बचेंगे उनसे पौधारोपण कर अपना शौक पूरा करूंगा। वह गांव के बजरंगबली मंदिर में पहुंचकर उस जगह को साफ किया और वहां पौधारोपण कर उस जगह का नाम **'हनुमान वाटिका'** रखा। इसके बाद हनुमान वाटिका के सामने चार पांच बीघा जमीन लेकर उसको **'फेसबुक वाटिका'** का नाम दिया। राजस्थान एवं बाहर से फेसबुक मित्रों ने ऑनलाइन पैसा भेजकर इस फेसबुक वाटिका में पौधा अपने नाम का लगाने को कहा। इस प्रकार गांव में किसी की शादी की सालगिरह हो, जन्मदिन हो या पुरुषों की स्मृति हो या नौकरी लगने की खुशी हो, सभी फेसबुक वाटिका में पौधे लगवाते हैं। अब हनुमान वाटिका अनेक पक्षियों एवं जीव–जंतुओं की शरण स्थली एवं प्रजनन स्थली बन चुकी है।

अपने बेटे के जन्मदिन पर 51 पौधे लगाकर उसको जीवन भर पर्यावरण प्रेम की सीख दी, जिसकी सभी ने प्रशंसा की। महावीर प्रसाद पांचाल जिला कलेक्टर, उपखंड स्तर द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। रणथंबोर टाइगर रिजर्व के द्वारा भी सम्मानित किया गया। उन्हें जिला वर्धक पुरस्कार से भी नवाजा गया। इस प्रकार उन्होंने पर्यावरण प्रेम के साथ यह भी संदेश दिया है कि यदि किसी व्यक्ति को नशे की लत लग चुकी है तो वह इससे छुटकारा पा सकता है, यह समाज के लिए एक उदाहरण है।

- **पीपल बाबा मनरूप जेठू**

सीकर जिले के फतेहपुर शेखावाटी तहसील के मनरूप जेठ पीपल बाबा के नाम से मशहूर हैं। इन्होंने पर्यावरण को बचाने के लिए अपनी पूरी जिंदगी लगा दी। 30 साल में करीब 75 से ज्यादा गांव में जाकर 10,000 से ज्यादा पीपल के पेड़ लगाकर लोगों को पौधारोपण का संदेश दिया। आयुर्वेद से मरीजों के इलाज में मिले रूपयों से पौधे खरीद कर गांव में 5 से 10 पेड़ लगाना शुरू किया। गांव के सरकारी स्कूल, शमशान भूमि आदि पर लगाए। सीकर के आसपास के नर्सरी संचालक इनसे पौधों के पैसे नहीं लेते हैं। जिला प्रशासन सहित कई अन्य संस्थाएं इन्हें सम्मानित कर चुकी है। वर्तमान समय में यह पीपल बाबा खटिया पर ही हैं। एक साल से ये दूसरे गांव में नहीं जा पाए हैं। उन्होंने यह प्रेरणा बच्चों को देख कर शुरू की। जब ये नागौर के जसवंतगढ में गर्मी की छुट्टियों में गए तो स्कूल के अंदर टीचर और गांव के स्टूडेंट्स को पीपल के पेड़ पर छिड़काव करते देखा तो वहां से पेड़ लगाने की प्रेरणा ली। अब तक 70 लाख से ज्यादा पैसा खर्च कर चुके हैं।

- **झुंझुनू के ट्रीमैन होशियार सिंह झाझड़िया**

ट्रीमैन होशियार सिंह झाझड़ियाजी अपनी प्रबल इच्छा शक्ति से, पूरी लगन से पर्यावरण सरंक्षण में अपने गांव सहित आसपास के गांव को हरा–भरा बनाने में कार्य कर रहे हैं। शुरू में उन्होंने एक नर्सरी खोली। उसमें भी ऐसे पौधे लेकर आए जो यहां मिलते नहीं थे। उनका साफ कहना है कि यदि सार्वजनिक जगह पर पौधे लगाने है तो आप निःशुल्क पौधे ले जाइए, लेकिन यदि आपको घर, खेत या बाग में पौधे लगाने हैं तो पैसा देना होगा। अब वे अपने खेत में पौधों को तैयार कर करते हैं। अब तक 50000 से ज्यादा पौधे लगा चुके हैं। होशियार सिंह जी अपने बाग में लगे फलों को बेचते नहीं बल्कि अपने घर पर काम में लेने के साथ–साथ गांव वाले, रिश्तेदारों, मित्रों को देते रहते हैं। जिससे उनको शुद्ध फल खाने को मिले ना कि रासायनिक जहर। आज उनकी नर्सरी में करीब 4 हजार वैरायटी के पौधे उपलब्ध है और उनकी संख्या लाख से भी ज्यादा है। किसानों को सलाह देते हैं कि आप फलदार पौधे लगाए, जिससे आपकी आय बढ़ सके। आपके पास बाग लगाने को जगह नहीं है तो खेत की मेड पर पौधे लगाएं। मिट्टी का कटाव भी रुकेगा और आय भी होगी। विशेष कर नींबू

वर्ग के पौधे लगाने की सलाह देते हैं जो कि शेखावाटी में आसानी से लग जाते हैं। यदि कोई आदमी सार्वजनिक स्थानों के लिए पौधे लेने के लिए आता है तो उसको शुरू में 11 से 21 पौधे उपलब्ध करवाए जाते हैं। यदि अगले साल तक आधे पौधे सुरक्षित रख लेता है तो वे कहते हैं कि आप कितने भी पौधे लेकर जा सकते हैं। श्री झाझड़िया जी विभिन्न संगठनों से सम्मानित हो चुके हैं।

- **राणा राम बिश्नोई**

जोधपुर जिले के ओसिया क्षेत्र के एकल खोरी गांव के रेतीले धोरों में रहने वाले हैं। आसपास के लोग ट्रीमैन के रूप में जानते हैं। राणा राम विश्नोई पिछले 60 साल में 50,000 से अधिक पौधे लगा चुके हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि उनके द्वारा पौधे मरुस्थल में स्थित रेतीले धोरों पर लगाए गए हैं, जहां लगभग पानी का अभाव ही रहता है। शुरू में पानी की बाल्टी लेकर खुद पानी डालते थे। प्रतिदिन 3 से 4 किलोमीटर चलते हैं। जहां पर भी राणाराम जाते हैं अपने साथ बीज लेकर जाते हैं। पेड़ों के लिए अनुकूल जगह देखकर यह सोचकर बीज डालते हैं कि अगर पानी मिलेगा तो यह जरूर पेड़ बनेगा। अपने गांव के आसपास नीम, रोहिडा, बबूल, कंकेरी जैसे हजारों पौधे पनपा चुके हैं। जो की रेत में टिकते नहीं है उन्हीं की मेहनत का परिणाम है। ये बाहर से पौधे लाकर उनकी कलम तैयार करते हैं। रेगिस्तान में पौधों को पानी के लिए उनकी जड़ों तक प्लास्टिक के पाइप डालते हैं, जिससे पानी सीधा जड़ों तक पहुंच सके। क्योंकि रेत में दिया गया पानी बड़ी मुश्किल से पहुंचता है। अब तक राणा राम ने अपने स्तर पर ही सब कुछ किया है। सरकार से कोई सहायता प्राप्त नहीं की। जब राणाराम 22 साल के थे तो बीकानेर गए। वहां बिश्नोई समाज के मुकाम धाम में सभा की। जाट नेता ज्ञान प्रकाश पिलानिया ने वृक्षारोपण को लेकर बहुत सारी बातें कही और कहा कि बिश्नोईयों का तो धर्म ही पेड़ लगाना और उसकी रक्षा करना है। उस दिन से राणा राम ने पहला पौधा मुकाम धाम में लगाया और पौधे लगाने की शुरुआत की। अब इस मुहिम को उनके पुत्र आगे बढ़ा रहे हैं। इनको कई संस्थाएं सम्मानित कर चुकी हैं।

जन आंदोलन की उपयोगिता

- जैविक खेती एवं परंपरागत खेती को अपनाने से रसायनों से मुक्त फसल प्राप्त होने लगी। जिससे स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं विभिन्न प्रकार की बीमारियों से छुटकारा मिलेगा जैसे कैंसर आदि।
- लड़की की शादी में दहेज में पेड़ देने एवं लड़की के जन्म होने पर पेड़ लगाने से सामाजिक कुरीतियों से छुटकारा मिलने लगा है।
- वृक्षारोपण के साथ–साथ नशा मुक्ति भिविरों में भाग लेने से इससे छुटकारा मिला।
- जमीन की उर्वरता बढ़ी।
- स्वच्छ हवा, पानी मिलने लगा।
- स्वरोजगार को बढ़ावा देने से आय बढी। जैसे पौधों की नर्सरी तैयार करना, नींबू, आंवला इनके उत्पाद बनाकर मार्केट में बाजार में बेचना।
- वृक्षारोपण से रेगिस्तान का प्रसार कम हुआ है।
- पक्षी एवं छोटे जीव–जंतुओं की शरण स्थली एवं प्रजनन स्थिति को बढ़ावा मिला।

सारांश

हमारी सृष्टि प्रकृति और पर्यावरण पर निर्भर है। जीने के लिए जरूरी हवा, पानी, खाद्य पर्यावरण की देन है। इनके बिना सृष्टि और किसी जीव की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमारे आसपास का वातावरण पेड़–पौधे, नदी, जंगल, जमीन और पहाड़ आदि से घिरा है। प्रकृति से हम बहुत कुछ लेते हैं, लेकिन बदले में सिर्फ इसे प्रदूषित कर रहे हैं। जंगलों को काटना, नदियों को गंदा करना, अवैध खनन कर पहाड़ों का सीना छलनी करने तथा अंधाधुंध पानी के दोहन से वातावरण को प्रदूषित कर हम प्रकृति का अस्तित्व खत्म करने के साथ ही अपने जीवन और आने वाली पीढ़ी के लिए खतरनाक वातावरण बना रहे हैं। ऐसे में जरूरत है पर्यावरण

संरक्षण के छोटे– छोटे प्रयास की। यदि प्रकृति संरक्षित होगी तो मानवीय जीवन सुरक्षित होगा। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ने संतुलित विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रकृति संरक्षण की सनातन भारतीय दृष्टि पर आधारित पर्यावरण अनुकूल नीतियों के निर्माण पर बल दिया। उन्होंने कहा कि पंचभूत तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को महत्व देने वाली भारतीय सनातन संस्कृति प्रकृति पूजक रही है तो इसके मूल में पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने का वैज्ञानिक आधार है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. (2020, 7 March Saturday). Retrieved from E TV Bharat: https://www.etvbharat.com
2. (2021, November 9 Tuesday). Retrieved from Zee News: https://zeenews.india.com
3. (2021, March 29 Monday). Retrieved from E TV Bharat: https://www.etvbharat.com
4. (2021, 28 June Monday). Retrieved from Rajasthan Today: https://rajasthantoday.online
5. (2022, 6 June Monday). Retrieved from Global Times: https://www.globaltimes.cn
6. (2022, 5 June Sunday). Retrieved from Dainik Bhaskar: https://www.bhaskar.com
7. Bhalla, L. R. (2020). *Geography of Rajasthan.* Jaipur: Kuldeep Publication House.
8. khan, W. A. (2012). *Paryavarniya samasyaye.* New Delhi: Rajat publication.
9. Mallick, K. (2021). *Environmental Movements of India: Chipko, Narmada Bachao Andolan, Navdanya.* Amsterdam University Press.
10. Mehta, T. (2021, 18 June Friday). Retrieved from Amar Ujala: https://www.amarujala.com.

❖◆❖